Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 3 | (July – Sep 2025)

समकालीन कला अभ्यास में अपशिष्ट पदार्थों का पुनर्चक्रण: एक स्थायी सौंदर्यशास्त्र

डॉ. भूपत राम
असिस्टेंट प्रोफेसर, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सारांश

समकालीन भारतीय कला में अपशिष्ट पदार्थों के पुनर्चक्रण की प्रवृत्ति, केवल एक पर्यावरणीय समाधान नहीं, बल्कि एक सशक्त सांस्कृतिक और सौंदर्यशास्त्रीय वक्तव्य बन चुकी है। यह प्रवृत्ति उस कलात्मक दृष्टिकोण को उजागर करती है, जिसमें कलाकार समाज द्वारा त्याज्य घोषित वस्तुओं जैसे प्लास्टिक, धातु, पुरानी साड़ियाँ, बर्तन, खिलौने आदि को रचनात्मक माध्यम बनाकर कला को वैचारिक गहराई प्रदान करते हैं। यह प्रक्रिया न केवल पर्यावरणीय चेतना को स्वर देती है, बल्कि वर्ग, श्रम, स्मृति, और लिंग आधारित अनुभवों को भी कलात्मक विमर्श में लाती है। सुबोध गुप्ता, भारती खेर, मंजरी शर्मा, हरेन्द्रनाथ, चिमन डांगी, निलेश कुमार सिद्धपुरा जैसे कलाकार और ग्रामीण महिला समूह इस प्रवृत्ति के सक्रिय वाहक हैं। उनकी कृतियों में पुनर्चक्रण सौंदर्यशास्त्र के साथ सामाजिक चेतना का समन्वय भी है। यह शोध इन कलाकारों की कृतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, तथा यह रेखांकित करता है कि पुनर्चक्रण अब केवल तकनीक नहीं, बल्कि एक उत्तरदायी कलात्मक दृष्टिकोण है।

मुख्य शब्द: समकालीन कला, पुनर्चक्रण, पर्यावरणीय चेतना, वस्त्र कला, चिमन डांगी, स्थायी सौंदर्यशास्त्र, स्त्री अनुभव

आलेख

21वीं सदी के सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में जब पृथ्वी जलवायु संकट, प्रदूषण और संसाधनों की कमी से जूझ रही है, तब कला भी इन विषयों से संवाद स्थापित कर रही है। अपशिष्ट पदार्थों का पुनः उपयोग कर रचना करना न केवल एक पर्यावरणीय जिम्मेदारी है, बल्कि यह सौंदर्य की पारंपरिक अवधारणाओं को चुनौती देने का एक प्रयास भी है। समकालीन कला अब केवल रंग, कैनवास और ब्रश तक सीमित नहीं रह गई है; यह उन वस्तुओं से भी संवाद करती है जिन्हें समाज त्याज्य मान चुका है।

वर्तमान युग की सबसे बड़ी चुनौतियों में जलवायु परिवर्तन, संसाधनों का क्षरण और उपभोक्तावाद का बढ़ता प्रभाव सम्मिलित हैं। ऐसे परिप्रेक्ष्य में जब मानव समाज प्रकृति से अपने संबंध को लगातार दुर्बल करता जा रहा है, कला एक माध्यम बनकर पुनर्संवाद की संभावना प्रस्तुत करती है। समकालीन कला में पुनर्चक्रण की यह प्रवृत्ति, उसी उत्तरदायित्व की एक अभिव्यक्ति है, जिसमें कलाकार न केवल त्यागी गई वस्तुओं को पुनरुपयोग करते हैं, बल्कि उन्हें वैचारिक, सौंदर्यात्मक और सामाजिक प्रतीकत्व प्रदान करते हैं।

कला में अपशिष्ट सामग्री के प्रयोग की ऐतिहासिक जड़ें आधुनिकतावाद के विरोध में उत्पन्न दादा आंदोलन (Dada Movement) से जुड़ी हैं। बीसवीं सदी के प्रारंभ में उत्पन्न यह आंदोलन पारंपरिक कला की अवधारणाओं, जैसे सौंदर्य, तकनीकी कौशल और अर्थवत्ता, के विरुद्ध एक प्रकार का सांस्कृतिक विद्रोह था। इस आंदोलन के प्रमुख कलाकारों ने वस्तुओं की पूर्वनिर्धारित उपयोगिता को नकारते हुए उन्हें कला के नए सन्दर्भों में प्रस्तुत किया।

इस संदर्भ में मार्सेल डुशांप का "रेडीमेड" (Readymade) की अवधारणा एक क्रांतिकारी मोड़ प्रस्तुत करती है। उनके द्वारा प्रस्तुत Fountain (1917) – एक सामान्य मूत्रालय पात्र – ने यह प्रश्न उठाया कि आखिर कला

क्या है, और कौन तय करता है कि क्या कला है। डुशांप के कार्यों ने वस्तुओं की औपचारिक उपयोगिता को नकारते हुए उन्हें सांस्कृतिक और वैचारिक वस्तुओं में रूपांतरित कर दिया।

डुशांप की इस विरासत को आगे बढ़ाया पॉप आर्ट, आर्ट ब्रूट और फाउंड ऑब्जेक्ट्स की परंपरा ने। इन आंदोलनों ने जनसंस्कृति, उपभोक्तावाद और असंस्कृत/कच्ची अभिव्यक्ति को कला की सीमा में शामिल किया। फाउंड ऑब्जेक्ट्स – यानी सामान्य रूप से अनुपयोगी या त्याज्य वस्तुएँ – अब कला की वैध सामग्री बन गईं।

पुनर्चक्रण और पर्यावरणीय कला को लेकर अंतरराष्ट्रीय और भारतीय दोनों ही स्तरों पर गहन विमर्श हुआ है। इस विमर्श की बुनियाद ऐसे चिंतनशील विचारकों और कलाकारों ने रखी, जिन्होंने कला को केवल दृश्य माध्यम न मानते हुए उसे सामाजिक हस्तक्षेप और परिवर्तन का औजार माना।

सूज़ी गैब्लिक की पुस्तक The Reenchantment of Art (1991) इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पाठ है, जिसमें उन्होंने कला को सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का माध्यम बताया। वे इस बात पर बल देती हैं कि आधुनिकता की ठंडी और आत्म-केंद्रित कला की धारणा से आगे बढ़ते हुए अब कला को पुनः सामाजिक संवाद की भूमि पर लाना आवश्यक है।

इसी क्रम में निकोलस बोरियॉड की Relational Aesthetics (1998) उल्लेखनीय है, जिसमें उन्होंने कला की परिभाषा को पारंपरिक 'कृति' से आगे ले जाकर 'संबंधात्मकता' और 'सहभागिता' की अवधारणा से जोड़ा। इस दृष्टिकोण में दर्शक केवल निरीक्षक नहीं, बल्कि कला की प्रक्रिया में सहभागी बनते हैं। पुनर्चक्रण की प्रक्रिया इसी संदर्भ में नए अर्थ ग्रहण करती है, जहाँ वस्तुएँ पुनः परिभाषित होकर सामाजिक संवाद के माध्यम बनती हैं।

समकालीन वैश्विक कला में एल अनात्सुई जैसे कलाकारों ने इस प्रवृत्ति को और अधिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के साथ आगे बढ़ाया है। उन्होंने शराब की बोतलों के ढक्कन, एल्युमिनियम की पट्टियाँ और अन्य त्याज्य धातु सामग्री को बुनकर भव्य, वस्त्र-जैसी दीवार-कृतियाँ निर्मित की हैं, जो उपनिवेशवाद, स्मृति और उपभोग पर विमर्श करती हैं।

भारतीय संदर्भ में यह प्रवृत्ति उस सामाजिक यथार्थ से जुड़ती है जहाँ वस्तुएँ केवल भौतिक नहीं, स्मृतिपरक भी होती हैं। इस प्रकार कलात्मक पुनर्चक्रण केवल पर्यावरणीय क्रिया नहीं रह जाता, वह स्मृति, श्रम और पहचान का पुनर्निर्माण भी है। वस्त्रों की कतरनों, पुरानी साड़ियों, धातु के टुकड़ों, ई-कचरे, घरेलू सामान, टूटे खिलौनों जैसी वस्तुओं के माध्यम से कलाकार स्त्री अनुभवों, घरेलूता, जातीय असमानता और वर्गभेद पर भी विमर्श प्रस्तुत करते हैं।

इस संदर्भ में सुबोध गुप्ता की रचनाएँ उल्लेखनीय हैं, जिनमें घरेलू बर्तन जैसे बाल्टियाँ, कनस्तर, थालियाँ आदि का प्रयोग एक ओर भारतीय मध्यमवर्गीय जीवन की स्मृति को उद्घाटित करता है, वहीं दूसरी ओर वैश्विक कला जगत को स्थानीय सांस्कृतिक संकेतों से समृद्ध करता है। उनकी कलाकृति Everything is Inside या Very Hungry God सामाजिक संरचनाओं और उपभोग संस्कृति की पड़ताल करती है।

भारती खेर ने बिंदियों, पुरानी मूर्तियों और घरेलू वस्तुओं को माध्यम बनाकर स्त्री देह और अनुभवों को कलात्मक स्वरूप दिया है। उनकी Bindis Series में बिंदियाँ केवल श्रृंगार नहीं, बल्कि आत्मसत्ता और सांस्कृतिक विमर्श की प्रतीक हैं।

मंजरी शर्मा का कार्य वस्त्र, फोटोग्राफ़ और सजावटी वस्तुओं के समागम से भारतीय सांस्कृतिक स्मृति को समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत करता है। उनकी Darshan श्रृंखला एक ऐसा उदाहरण है जहाँ पुनर्पाठ और पुनर्चक्रण एक साथ घटित होते हैं।

निलेश कुमार सिद्धपुरा का कार्य स्थानीयता और स्थानिकता को रेखांकित करता है। उनकी कलाकृतियों में लकड़ी, कपड़े और घरेलू वस्तुओं का प्रयोग करते हुए स्मृति और समुदाय की भावना को मूर्त रूप दिया गया है। इसी क्रम में डॉ.चिमन डांगी का कार्य विशिष्ट है, जो राजस्थान के ग्रामीण जीवन, श्रम और लोकस्मृति को कला का विषय बनाता है। वे जिन त्याज्य वस्तुओं का उपयोग करते हैं, वे एक नई संस्कृति का निर्माण करती हैं, जिसमें पर्यावरणीय चेतना और सौंदर्यशास्त्रीय मूल्य एकाकार हो जाते हैं।

मूर्तिकार हरेन्द्रनाथ पुरानी मशीनों के पुर्जे, लोहा, कांसा आदि से मूर्तियाँ बनाकर स्थानीय संस्कृति और पर्यावरणीय चेतना के मध्य पुल निर्मित करते हैं। वहीं राजस्थान और गुजरात की ग्रामीण महिला कलाकार वस्त्रों की कतरनों से कोलाज बनाकर त्योहार, स्त्री जीवन और पारिवारिक संबंधों को दर्शाती हैं, जो पुनर्चक्रण की एक जैविक और जीवंत अभिव्यक्ति है।

इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि पुनर्चक्रण आधारित समकालीन कला केवल एक पर्यावरणीय प्रक्रिया नहीं है, बल्कि वह एक वैचारिक आंदोलन का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। यह सौंदर्यशास्त्र पारंपरिक परिभाषाओं को तोड़कर एक नई दृष्टि प्रस्तुत करता है, जहाँ टूटन, असंगति और अपूर्णता भी सौंदर्य के उपादान बन सकते हैं।

चर्चा

पुनर्चक्रण आधारित समकालीन कला ने सौंदर्य की पारंपरिक अवधारणाओं को चुनौती दी है और एक नई सौंदर्य दृष्टि का निर्माण किया है। अब कला केवल परिपूर्णता, नवीनता या तकनीकी निपुणता तक सीमित नहीं रह गई है; इसके विपरीत, खंडित, प्रयुक्त, उपेक्षित और अपूर्ण वस्तुएँ भी 'सुंदर' मानी जा रही हैं न केवल उनके भौतिक स्वरूप के कारण, बल्कि उनके भीतर निहित कथा, स्मृति और सामाजिक अर्थों के कारण।

इस दृष्टिकोण में पर्यावरणीय चेतना, सामाजिक सरोकार और सांस्कृतिक स्मृति तीनों का संगम दिखाई देता है। अपशिष्ट वस्तुओं का पुनर्प्रयोग केवल एक रचनात्मक निर्णय नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक उत्तरदायित्व की अभिव्यक्ति भी है, जो संसाधनों के प्रति सजगता और टिकाऊ भविष्य की परिकल्पना से जुड़ी है। समकालीन कलाकार इस चेतना को केवल उपदेशात्मक ढंग से नहीं, बल्कि कला के माध्यम से संवेदनशील, प्रभावशाली और बहुआयामी रूप में प्रस्तुत करते हैं। कलाकारों द्वारा प्रयुक्त अपशिष्ट वस्तुएँ अब केवल 'माध्यम' नहीं रह गईं, वे स्वयं ही 'कथ्य' का रूप ले लेती हैं। एक पुराना ताला, एक टूटी चूड़ी या एक फेंका हुआ खिलौना ये सभी वस्तुएँ अपने भीतर जीवन की कहानियाँ, समाज की परतें और संस्कृति की ध्वनियाँ समेटे हुए होती हैं। जब इन्हें कलाकृति में रूपांतरित किया जाता है, तो वे अपने पूर्व स्वरूप से मुक्त होकर नए अर्थ और संवेदनाएँ ग्रहण करती हैं।

इस समग्र प्रक्रिया में स्त्री दृष्टिकोण की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्त्री कलाकारों ने घरेलू वस्तुओं, सिलाई-कढ़ाई के उपकरणों, पुराने वस्त्रों और सौंदर्य प्रसाधनों जैसे प्रतीकों को न केवल पुनर्परिभाषित किया है, बल्कि उनके माध्यम से स्त्री श्रम, अनुभव और पहचान को भी दृश्य स्वरूप प्रदान किया है। यह दृष्टिकोण कलात्मक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और सांस्कृतिक भी है जो उन अनकहे अनुभवों को सामने लाता है, जो पारंपरिक कला-इतिहास में अक्सर उपेक्षित रहे हैं।

इस प्रकार, पुनर्चक्रण आधारित कला आज केवल एक शैली नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक हस्तक्षेप बन चुकी है, जो पर्यावरण, समाज और स्मृति तीनों के बीच एक गहरे संवाद की स्थिति निर्मित करती है।

निष्कर्ष

समकालीन कला में अपशिष्ट पदार्थों का पुनर्चक्रण केवल एक रचनात्मक प्रयोग नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्विचार है। यह प्रक्रिया उस वैचारिक बदलाव को रेखांकित करती है, जिसमें कला की पारंपरिक सीमाएँ और सौंदर्यशास्त्रीय मान्यताएँ लगातार चुनौती के दायरे में हैं। आज खंडित, परित्यक्त और उपेक्षित वस्तुएँ न केवल काव्यात्मकता, बल्कि सामाजिक, पर्यावरणीय और ऐतिहासिक चेतना की संवाहक बन चुकी हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यह प्रवृत्ति दादा आंदोलन, मार्सेल डुशांप के "रेडीमेड", पॉप आर्ट और आर्ट ब्रूट जैसे आंदोलनों से प्रेरणा लेती है, जिन्होंने 'कला क्या है?' इस मूलभूत प्रश्न को पुनः परिभाषित किया। समकालीन वैश्विक और भारतीय कलाकारों ने इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए पुनर्चक्रण को एक गहन सामाजिक-सांस्कृतिक वक्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया है।

भारतीय संदर्भ में, सुबोध गुप्ता, भारती खेर, मंजरी शर्मा, चिमन डांगी, निलेश कुमार सिद्धपुरा, हरेन्द्रनाथ जैसे कलाकारों ने स्थानीय वस्तुओं, घरेलू उपकरणों और अपशिष्ट सामग्री को एक वैकल्पिक सौंदर्य और स्मृति के माध्यम में रूपांतरित किया है। इन कृतियों में 'माध्यम' स्वयं 'विषय' बन जाता है जो उपेक्षा, विस्थापन, श्रम और पहचान की परतों को उघाड़ता है। स्त्री दृष्टिकोण इस प्रवृत्ति में एक विशिष्ट स्थान रखता है, जहाँ घरेलू वस्तुएँ, वस्त्र, बिंदी, कढ़ाई आदि प्रतीकों के माध्यम से स्त्री-अनुभवों को दृश्यता और वैचारिक शक्ति प्राप्त होती है। यह दृष्टिकोण न केवल कला को समावेशी बनाता है, बल्कि पितृसत्तात्मक कला-इतिहास को भी चुनौती देता है।

पुनर्चक्रण आधारित कला एक स्थायी सौंदर्यशास्त्र की स्थापना करती है ऐसा सौंदर्यशास्त्र जो उपभोग से नहीं, बल्कि स्मृति, पुनर्परिभाषा और सामाजिक-जवाबदेही से निर्मित होता है। यह कला न केवल दृश्य है, बल्कि संवेदनात्मक, वैचारिक और नैतिक स्तरों पर भी क्रियाशील है। यही इसकी सबसे बड़ी प्रासंगिकता और शक्ति है।

संदर्भ सूची

1. 1. गैब्लिक, सूज़ी। दि रीएनचेंटमेंट ऑफ़ आर्ट । लंदन: थेम्स एंड हडसन, 1991।
2. बोरिया, निकोलस। रिलेशनल एस्थेटिक्स। फ्रांस: ले प्रेस डू रियल, 1998।
3. डाड़ी, अनुषा। "आर्ट फ्रॉम वेस्ट: ए स्टडी ऑफ कंटेम्परारी इंडियन प्रैक्टिसेस।" जर्नल ऑफ़ ईको-आर्ट, खंड 14, अंक 2, 2022, पृ. 88–105।
4. घोष, स्वाति। "सस्टेनेबिलिटी एंड एस्थेटिक्स: टेक्सटाइल वेस्ट इन फेमिनिस्ट आर्ट।" इंडियन आर्ट रिव्यू, खंड 9, अंक 1, 2021, पृ. 23–39।
5. भौमिक, संजय। "बियॉन्ड ब्यूटी: आर्ट, वेस्ट, एंड इकोलॉजी।" एशियन एस्थेटिक जर्नल, खंड 7, अंक 3, 2020, पृ. 56–72।
6. शर्मा, मीनाक्षी। "आर्ट ऐज़ रेसिस्टेंस: कंटेम्परारी इंस्टॉलेशंस फ्रॉम वेस्ट।" कंटेम्परारी कल्चर क्वॉर्टरली, खंड 6, अंक 2, 2021, पृ. 45–59।
7. 7. सिंह, पूनम। ग्रीन इज़ द न्यू ब्लैक: इको-कॉन्शस आर्ट इन इंडिया । नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019।
8. 8. ट्रैश टू ट्रेज़र । प्रदर्शनी विवरणिका, नगमा, नई दिल्ली, 2023।

9. कुमार, ऋतु। "वीमेन एंड वेस्ट: मेमोरी इन मटेरियल।" विज़ुअल कल्चर टुडे, खंड 4, अंक 1, 2023, पृ. 17–29।
10. खेर, भारती। "रिक्लेमिंग द बॉडी: स्कल्प्चर एंड सिंबॉलिज़्म।" इंडियन कंटेम्पररी आर्ट रिव्यू, खंड 5, अंक 4, 2020, पृ. 40–52।
11. Gablik, S. (1991). The Reenchantment of Art. Thames & Hudson.
12. Bourriaud, N. (1998). Relational Aesthetics. Les Presses du Réel.
13. Dadi, A. (2022). Art from Waste: A Study of Contemporary Indian Practices. Journal of Eco-Art, 14(2), 88–105.
14. Ghosh, S. (2021). Sustainability and Aesthetics: Textile Waste in Feminist Art. Indian Art Review, 9(1), 23–39.
15. Bhowmik, S. (2020). Beyond Beauty: Art, Waste, and Ecology. Asian Aesthetic Journal, 7(3), 56–72.
16. Sharma, M. (2021). Art as Resistance: Contemporary Installations from Waste. Contemporary Culture Quarterly, 6(2), 45–59.
17. Singh, P. (2019). Green is the New Black: Eco-conscious Art in India. New Delhi: Vani Prakashan.
18. Exhibition Catalogue (2023). Trash to Treasure. NGMA, New Delhi.
19. Kumar, R. (2023). Women and Waste: Memory in Material. Visual Culture Today, 4(1), 17–29.
20. Kher, B. (2020). Reclaiming the Body: Sculpture and Symbolism. Indian Contemporary Art Review, 5(4), 40–52.

कलाकार: हरेन्द्रनाथ

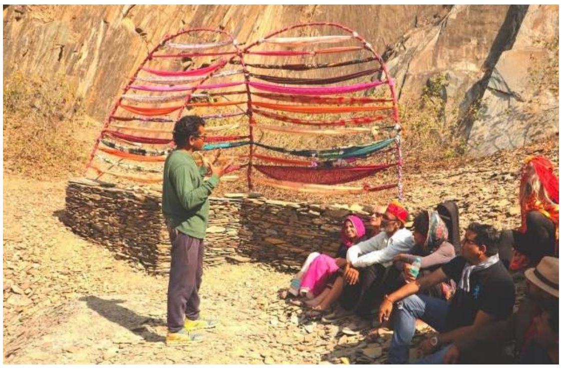

कलाकार: निलेश कुमार सिद्धपुरा